eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

महिला सशक्तिकरण की दृष्टि (विजन फार विकसित भारत) पश्चिमी नारीवाद एवं भारतीय स्त्रीत्व : तुलनात्मक अध्ययन

डॉ चेतना उपाध्याय[1]

[1]वरिष्ठ व्याख्याता, जिला शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान, अजमेर, राजस्थान

Received: 24 Oct 2024 Accepted & Reviewed: 25 Oct 2024, Published : 31 Dec 2024

Abstract

नारीवाद पूर्णतः प्राकृतिक है जो कि सामाजिक परिवेश में अवधारणाओं से प्रेरित व प्रभावित होता है। यह एक संघर्ष आन्दोलन के रूप में यह प्रयास करता है कि महिलाओं को भी समान मनुष्य माना जाए और उनकी गरिमा स्वतंत्रता समानता, जैविक आधार पर न होकर उनके व्यक्ति स्वरूप में हो। नारीवादी संघर्ष/विमर्श मात्र इसलिए कि समाज में नर नारी से परे व्यक्तिवादी विचारधारा सर्वव्यापी हो। समाज में नारीवादी विचारधारा का उठना इस बात का प्रमाण है। समाज में भिन्न लिंगी प्राणियों यथा नर–मादा के प्रति सम दृष्टिकोण का अभाव है। जो प्राणी कमतर महसूस करता अथवा सार्वभौमिक रूप में जिसे कमतर एहसास करवाया जाता है। कालांतर में वह शनेः–शनेः मुखर हो अपने आत्मसम्मान की चाहत में उग्रता की ओर कदम बढ़ाने ही लगता है।

शब्द संक्षेप– महिला सशक्तिकरण, विजन फार विकसित भारत, पश्चिमी नारीवाद, भारतीय स्त्रीत्व

Introduction

नारीवाद का उभरना यह सिद्ध करता है कि मानव समाज में नारी को सहज स्वाभाविक नर के समरूप प्राणी के रूप में स्वीकारोक्ति प्राप्त नहीं हो पा रही है।

भारतीय संस्कृति की धरोहर मनुस्मृति में कहा गया है कि–

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।

अर्थात जिस कुल में नारियों की पूजा, अर्थात् सत्कार सम्मान होता है, उस कुल में दिव्य गुण, दिव्य भोग और उत्तम संतान होते हैं और जिस कुल में स्त्रियों की पूजा (सम्मान) नहीं होती वहां .....उनकी सब क्रिया निष्फल है। बेकार है।

उक्त उक्ति भारतीय नारी की सशक्त गरिमामयी छवि को स्पष्ट करती है यह शत प्रतिशत सही है। मगर यह भी यहां स्पष्ट होता है कि समाज में इस मान्यता का पोषण करने हेतु ही यह कहा गया होगा। इसकी आवश्यकता तब ही महसूस की गई होगी जब नारी को नर के समकक्ष मान्यता प्राप्त नहीं हो पा रही होगी। यह भी कटु सत्य है तब ही तो भारत में देर–सवेर नारीवाद उभरा।

सामाजिक एवं व्यवहार विज्ञान का अंतर्राष्ट्रीय विश्वकोष 2001 में भी यह बताया गया है कि नारीवादी सिद्धांत विचारों का एक समूह है जो इस विश्वास से उत्पन्न होता है कि महिलाएं पुरुषों के अधीन नहीं

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

है। ना ही पुरूषों के साथ संबंध में ही मूल्यवान है। आज हमारे विश्व में मौजूद अनुशासन, प्रणालियाँ और संरचनाएँ बेहतर हो सकती है यदि उनमें नारीवादी दृष्टिकोण शामिल कर लिया जाए।

इससे भी यही स्पष्ट होता है कि संपूर्ण विश्व में महिलाएं, पुरुषों से कमतर आंकी जा रही है। तभी महिलाएं समानतावदी अपेक्षाओं के चलते नारीवादी संघर्ष – आंदोलन से सहभागिता दर्शा रही है। इस तरह से गहन अध्ययन करने पर हमने पाया कि भारतीय व पश्चिमी नारीवाद प्रारूप में कोई भूलभूत अंतर नहीं है। नारी की जैविकीय संरचना समरूप होने से उनकी मनोभूतियों में भी समरूपता के ही दर्शन होते हैं। यहां भी हमनें पाया कि नारीवाद एक वैचारिक विमर्श के रूप में समानतावादी दृष्टिकोण की अपेक्षा मात्र है। जो कि लैंगिक विभेद से परे, सम, मानव रूपी पहचान चाहता है।

भारतीय गरिमामयी संस्कृति की सषक्तता का परिचय विश्वव्यापी है। यह कटु सत्य सभी जानते हैं। उसके बावजूद भी वर्तमान भारत में नारीवादी परिदृश्य पश्चिम की छाया बनने को आतुर है। पश्चिम की भी चंद महिलाएं हैं जो पूरब की गरिमामयी नारीवादी संस्कृति से प्रभावित हो अपने नारीवादी दृष्टिकोण में उसे स्थान दे रही है। मगर उनका प्रतिशत बहुत कम है। अपने अध्ययन के दौरान पश्चिम की 10 प्रतिशत महिलाओं में पूरब के नारीवादी दृष्टिकोण के दर्शन हुए। वहीं पूर्व की 70 प्रतिषत महिलाओं में पश्चिमी नारीवाद दृष्टिकोण पाया गया।

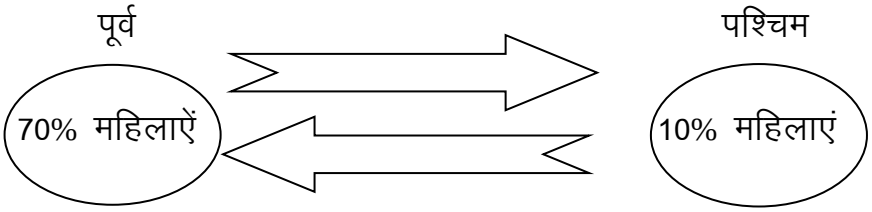

अतः नारीवाद को पूरब–पश्चिम में बांटकर देखना बड़ा चुनौती भरा लग रहा है, कारण कि वर्तमान दौर में नारीवादी हवा का रुख पूर्व से पश्चिम की ओर बढ़ता उसके प्रभाव में दृष्टिगोचर हो रहा है जबकि सामान्यताः नारीवाद परिवेश व सामाजिक, आर्थिक, मानसिक राजनीतिक, परिस्थितियों से प्रभावित होता है।

नारीवादी आंदोलनों का जन्म–

1848–1880 के दौर में स्कैंडिंने वियाई देशों में महिलाओं की कानूनी अधीनता, बेटियों पर पिता का अधिकार और एकल वयस्क महिलाओं की स्थिति पर सवाल उठाए गए और 1850 के दशक में सुधार का विषय बन गए। इसके पश्चात पश्चिमी और मध्य यूरोप में नारीवादी आंदोलन का गठन प्रारंभ हुआ।

भारत में सावित्रीबाई फुले ने 1848 में महाराष्ट्र राज्य में बालिकाओं के लिए प्रथम विद्यालय का शुभारंभ किया। जो कि महिला शिक्षा के माध्यम से अधिकारों के प्रति सजगता हेतु वातावरण निर्माण का प्रयास था। फिर 1882 में ताराबाई शिंदे ने भारत का प्रथम माने जाने वाला नारीवादी ग्रंथ ''स्त्री पुरुष तुलना'' लिखा। इस प्रकार भारत में नारीवादी आन्दोलन का पहला चरण समानतावादी दृष्टिकोण व रूढिवादिता उन्मूलन के परिपेक्ष्य में हुआ, यथा निरक्षरता, बाल विवाह, विधवाओं के पुर्नविवाह, सती प्रथा उन्मूलन व संपत्ति में भी समान अधिकार प्राप्ति के संदर्भ में था। जो कि तब भी पश्चिमी आदर्शो से प्रभावित था।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

इसके पश्चात 19वीं सदी तक आते–आते अनेक नारीवादी मुद्दे उभरे। भारतीय महिलाओं हेतु शुरुआती सुधार के प्रयास अधिकांशतः पुरुषों द्वारा किए गए। 20वीं सदी के अंत तक महिलाओं ने स्वतंत्र महिला संगठनों के गठन के माध्यम से अधिक स्वायत्तता प्राप्त की। 30–40 के दशक के अंत तक महिला सक्रियता के बारे में एक नई कहानी निर्माण शुरू हुआ इस पर नए सिरे से शोध अध्ययन हुए। नारीवाद और मार्क्सवाद के साथ–साथ सांप्रदायिकता, जातिवाद आदि के मध्य तार्किक और जैविक संबंध बनाने की दृष्टि से इसका विस्तार किया गया। भारतीय संविधान ने लैंगिक समानतावादी दृष्टिकोण को प्राथमिकता दी। परिणामस्वरुप 1970 की दशक तक आते–आते भारत में महिला आंदोलनों में सापेक्षिक खामोशी का संचार हुआ। क्योंकि ऐसा माना जाने लगा कि महिला सशक्तिकरण की दिशा में कदम उठा लिए गए हैं।

महिला सशक्तिकरण शब्द का इस्तेमाल जीवन के सभी क्षेत्रों जैसे शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, सुरक्षा इत्यादि में महिलाओं की सषक्ता को संदर्भित करने के लिए किया जाता है। यह समाज या राष्ट्रीय ही नहीं पूर्णतया विश्व की सामाजिक आर्थिक प्रगति के लिए है।

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में नारीवादी आंदोलन की प्रथम लहर 1800 के दशक में एलिजाबेथ कैंडी स्टैंटन के माध्यम से उठी। और 1920 के दशक की शुरुआत के मध्य इसने जोर पकड़ा। जो कि संपत्ति व मताधिकार के आसपास रही। द्वितीय लहर स्त्री पुरुष समानतावादी अपेक्षाओं के साथ भेदभाव विरोधी थी। यहां 1990 के दशक में तृतीय लहर उठी जो कि श्वेत महिलाओं के विशेषाधिकार के प्रति प्रतिक्रिया स्वरूप थी वर्तमान दौर में भी नारीवादिता की चतुर्थ लहर लैंगिक समानता के प्रति ही है। क्योंकि विश्व में लैंगिक समानता के मामलें में यह अभी तक भी 17 वे स्थान पर है। लैंगिक विभेद आज भी वहां अनेकों क्षेत्रों में दृ ष्टिगोचर हो ही जाता है। इस तरह से हम पाते हैं कि नारीवादी संघर्ष का जन्म हमेशा लैंगिक समानता की चाहत से ही होता है जो की प्रगतिशीलता में बाधक होता है।

आधुनिक नारीवाद – महिला पुरुष की जैविक संरचना में अंतर होते हुए भी सामाजिक स्वरूप में महिला पुरुष सामान भूमिका, मूल्य व सम्मान, राजनीतिक, आर्थिक शैक्षिक, व्यावसायिक सहभागिता की अपेक्षा है। वास्तव में नारीवादी सिद्धांत विचारों का एक समूह है जो इस विश्वास से उत्पन्न होता है कि महिलाएं पुरुषों के अधीन नहीं है। पुरुषों के समान ही महिलाओं का स्वतंत्र व्यक्तित्व है। और इसे इसी स्वरूप में स्वीकारा जाना चाहिए।

लैंगिक समानतावादी बातें करने या दृष्टिकोण रखने की स्थिति अलग है वास्तविकता भी इससे बिल्कुल पृथक है। क्योंकि संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा जारी सूचकांक के अनुसार 196 देशों में लैंगिक समानता के क्षेत्र में भारत 108 वें स्थान पर है जो कि भारत में लैंगिक विभेद की स्थितियों को ही प्रकट करती है। पश्चिम में विकसित समृद्ध ताकतवर राष्ट्र अमेरिका भी 17वें स्थान पर है। अतः समय–समय पर नारीवादी आंदोलन की मुखरता बढ़ती रहती है। क्योंकि विश्व की आधी आबादी कहलाने वाली नारी आज भी लैंगिक विभेद का शिकार है। प्रतिशत कहीं कम तो कहीं ज्यादा है। कहीं कहीं किसी विशिष्ट क्षेत्रों में न्यूनता के दर्शन होते हैं। अतः पूर्व व पश्चिम के नारीवादी की तुलना करना बहुत चुनौती भरा है। व सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षिक, सुरक्षा जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों में नित नवीन उपजते परिवेश के कारण नित नवीन पृथक–पृथक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। नारीवादी संघर्ष परिवेशीय स्थितियों आधार पर अपना रूप परिवर्तित करता रहता है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

बीबीसी द्वारा प्राप्त जानकारी के आधार पर लैंगिक समानता के क्षेत्र में आइसलैंड WEF रैंकिंग में शीर्ष स्थान पर है। इसके पश्चात नार्वे (2) फिनलैंड (3) न्यूजीलैण्ड (4), स्वीडन (5), जर्मनी (6) निकारागुआ (7) नामिबिया (8), लिधुअनिया (9) बेल्जियम (10) कुल मिलाकर प्रथम 10 स्थानों पर आते हैं।

आइसलैंड राजनीतिक सशक्तिकरण के मामले में प्रथम स्थान होने के बावजूद भी महिला शिक्षा के क्षेत्र में 79वें, महिला स्वास्थ्य–जीवनरक्षा क्षेत्र में 128वें स्थान पर आता है। अतः अभी भी यहां नारी सशक्तिकरण की दिशा में उक्त क्षेत्र में नारीवाद मुखरता से आंदोलनरत है।

उक्त रैंकिंग आधार के क्रम में सबसे अंतिम पायदान पर यमन राष्ट्र आता है। यहां महिलाएं निरंतर यौन हिंसा प्रताड़ना व अपमानजनक स्थितियों की शिकार रहती है। असुरक्षित महिलाएं आपस में एकजुटता से कुछ कह पाने की स्थितियों मे नहीं रह पाती। फिर भी कई बार पारिवारिक प्रताड़ना के असहनीय होने पर नारीवादी आंधी उठती है। जो कि प्रमुखतः नारी सुरक्षा की गुहार लगाती है। क्योंकि वहां पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षिक, स्वास्थ्य इत्यादि समस्त क्षेत्रों में महिलाओं की सुरक्षा महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

पश्चिमी एशिया और पूर्वी यूरोप के मध्य स्थित जॉर्जिया, सोवियत संघ से स्वतंत्र होने के पश्चात अनेकों आंतरिक संघर्षों से जूझता हुआ स्वतंत्र राष्ट्र बना है। जॉर्जिया ने भेदभाव विरोधी कानून और मानवाधिकारों के संरक्षण व संवर्धन के समर्थन में बेहद महत्वपूर्ण प्रगति की है। यहां पितृसत्तात्मक संस्कृति होने के साथ ही महिलाओं का सम्मान शूरवीर के रूप में किया जाता है। यहां तिबलिसी के ऊपर पहाड़ियों पर एक स्मारक है जहां जार्जिया की मां की मूर्ति है। जिसके बांय हाथ में अपने प्रिय पेय का प्याला है जिसके साथ वह अपने दोस्तों का अभिवादन करती है, व दाएं हाथ में अपने दुश्मनों के खिलाफ खींची गई तलवार है। जो कि यहां के राष्ट्रीय चरित्र का नारी सामर्थ्य का प्रतीक है। इसके बावजूद भी लैंगिक रूढ़िवादिता की जड़े बड़ी गहरी मौजूद है। प्राप्त आंकड़े लैंगिक विभेद को ही प्रकट करते हैं। अतः नारीवादी संघर्ष निरंतर जारी है।

जॉर्जिया में संयुक्त राष्ट्र महिला संगठन संयुक्त राष्ट्र रेजिडेंस कोऑर्डिनेटर प्रणाली का हिस्सा है जो लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण पर संयुक्त राष्ट्र समूह के काम का नेतृत्व व समन्वय करता है। जेंडर संवेदनशीलता को समभाव बनाए रखने का काम करता है। अर्थात यहां नारीवाद को सामाजिक, राजनीतिक समर्थन प्राप्त है। अतः यहां नारीवादी आन्दोंलनों की उग्रता अन्य देशो की तुलना में कम पाई गई है। मगर लैंगिक समानतावादी दृष्टिकोण हेतु नारीवाद समय–समय पर उभरता अवश्य है। यहां महिलाओं को यौन स्वत्रतंता प्राप्त है। और यौन हिंसा भी न्यूनतम है। लौंगिक समानता नारीवाद का प्रमुख मुद्दा रहता है।

नारीवाद के प्रमुख मुद्दों पर भारत पश्चिमी विचारधारा संबंधी प्राप्तांक प्रतिशत में

		भारतीय	पश्चिम
1.	सम्मानजनक व्यवहार	100%	100%
2.	लैंगिक समानता	100%	100%
3.	यौन दुराचार से मुक्ति	100%	100%

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

4.	यौन स्वतत्रंता	40%	100%
5.	शैक्षिक स्वत्रंतता	80%	100%
6.	राजनीतिक स्वत्रंतता	60%	90%
7.	पारिवारिक दबाव	80%	20%
8.	सन्तानोत्पत्ति	100%	100%
9.	बाल विवाह	85%	छ।
10.	दहेज प्रथा	80%	छ।
11.	सांस्कृतिक संरक्षण	70%	40%
12.	व्यावसायिक स्वत्रंतता	70%	90%
13.	आर्थिक स्वत्रंतता	80%	100%

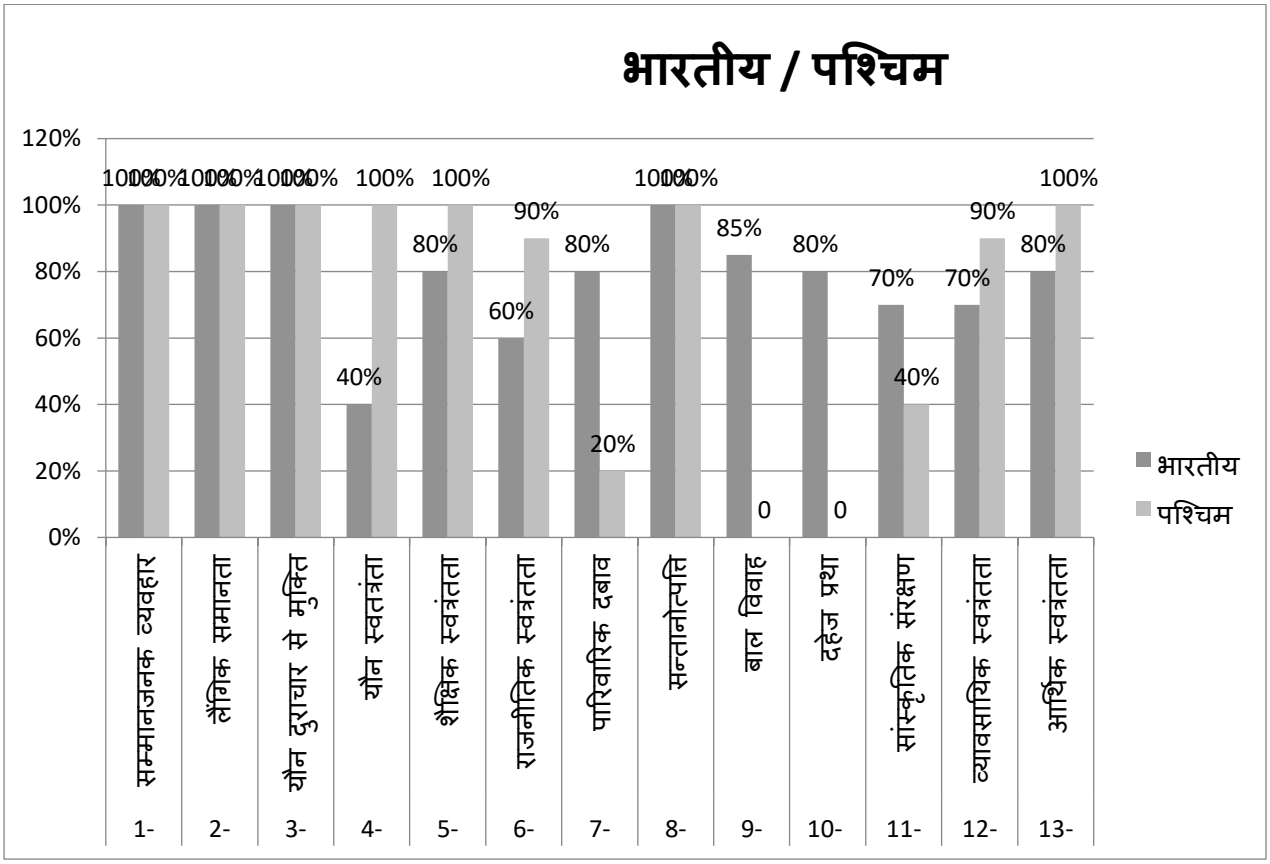

इस तरह प्राप्त कुछ आंकड़े है जो भारतीय व पश्चिमी नारीवाद को एक स्थान पर लाकर समझने का अवसर देते हैं भारत में पारिवारिक व्यवस्था का सौंदर्य आज भी कायम है हालांकि भारतीय संयुक्त परिवार की परंपरा में 80 प्रतिशत परिवर्तन आ चुकने के बावजूद भी परिवार व पारिवारिक व्यवस्थाओं को समर्थन प्राप्त है। अतः नारीवाद में परिवार से जुड़े मुद्दे भारत में अपेक्षाकृत रूप में अधिक उभरते हैं। दहेज प्रथा, बाल विवाह पारिवारिक दबाव पश्चिम में नारीवादी आंदोलनों का प्रमुख मुद्दा नहीं होता।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

भारत में नारीवाद का सूक्ष्म अध्ययन करने पर कुछ नवीनताएं भी दृष्टिगोचर हुई। जैसे कि वर्तमान में भारतीय महिलाएं सषक्तता की ओर बढ़ती हुई महसूस हुई। क्योंकि 72 प्रतिषत महिलाएं अब आर्थिक निवेश को लेकर स्वतंत्र निर्णय ले रही है। वे पुरुषों की तुलना में अधिक मात्रा में निवेश कर रही है। एक मुष्त निवेश में पुरुष 59.5 प्रतिशत महिलाएं 65.5 प्रतिशत पर है। जो की महिलाओं की भागीदारी लगभग 5 प्रतिशत अधिक दर्शा रहा है। (एक्सिस बैंक की विमेन इन्वेस्टमेंट बिहेवियर रिपोर्ट 2024)

भारत में नियोक्ताओं का बड़ा वर्ग प्रगतिशील नीतियों, कौषल बढ़ाने और लचीलेपन के जरिए विविधताओं तथा लैंगिक समानताओं का बढ़ावा देने के लिए सक्रिय कदम उठा रहा है। मैनपावर ग्रुप इंडिया द्वारा किए ताजा सर्वे के अनुसार भारत में 54 प्रतिशत कंपनियां विभिन्न स्तरों पर महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने की दिशा में कदम उठा रही है। जबकि इस मामले में वैश्विक औसत 46 प्रतिशत है।

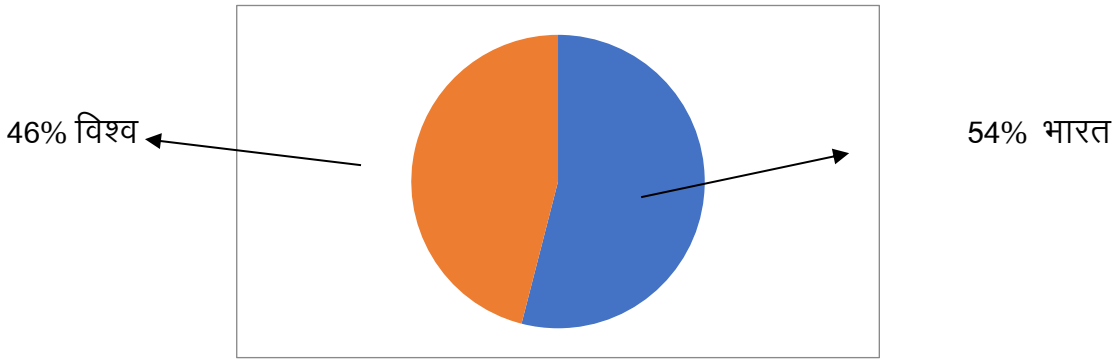

70 प्रतिशत नियोक्ताओं ने कहा कि प्रौद्योगिकी में लैंगिक समानता को बढ़ावा दिया जा रहा है। 38 प्रतिशत नियोक्ताओं को उम्मीद है कि उनके संगठन में लैंगिक समानता जल्द ही पूरी तरह से हासिल हो जाएगी। प्रशासनिक फ्रंटलाइन मैनेजमेंट जैसी भूमिकाओं में महिलाओं की हिस्सेदारी बढ़कर 57 प्रतिशत तक हो गई है।

नेशनल काउंसिल आफ अप्लाइड इकोनामिक रिसर्च के एक अध्ययन के मुताबिक शीर्ष प्रबंधन में महिलाओं की हिस्सेदारी वित्त वर्ष 2013–14 में 14 प्रतिषत थी जो 22–23 में बढ़कर 22प्रतिशत हो गई है। यह नारीवादी संघर्ष का ही नतीजा है। हालांकि मझोलें स्तर के प्रबंधन स्तर में भारत अभी भी पीछे ही है। यही कारण है कि विश्व में यह 127वें स्थान पर होने से लैंगिक समानता क्षेत्र में पिछड़ा हुआ ही माना जा रहा है। अतः नारीवादी संघर्ष यहां निरंतर जारी है।

हालांकि भारतीय संस्कृति में नारी को प्रारंभ से ही गरिमामय स्थान प्राप्त रहा है, मगर मुगलों के आक्रमण के पश्चात परिस्थितियोंवश स्थितियों में कुछ परिवर्तन आए फिर अंग्रेजों का आक्रमण हो गया। भारत को गुलामी सहते सहते लंबा समय गुजरा। अब आजादी के 75 वर्षो के गुजर जाने के बाद भी वह अभी इन विचलनकारी स्थितियों से उबर नहीं पाया है। पश्चिमीवादी सोच व चकाचौंध हमारे नारीवादी आंदोलनों को भ्रमित कर दिशाहीन भी कर जाती है। यह एक कटु सत्य है। भारतीय संस्कृति व पाश्चात्यीकरण आपस में मेल नहीं खाता। परिणामस्वरुप हमारे नारीवादी आंदोलन हिचकोले खाते हुए आगे बढ़ रहे हैं। लैंगिक समानता हेतु लैंगिक भेदभाव दूर करते हुए नारीवादी संघर्ष निरंतर जारी है। जो कि भारत में उम्मीद की

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

किरण जगाए हुए हैं। भारत में नारीवाद पश्चात्यीकरण के पीछे अंधानुकरण ना करें तो यह विजय पताका लैंगिक समानता के क्षेत्र में शीघ्रताशीघ्र फहराने की संभावना बलवती होती नजर आ रही है। भ्रमित करने वाली रूढिवादिता के बादल अब यहां धीरे–धीरे छंट रहे हैं। जो कि प्रगतिसूचक है। अपने अध्ययन के दौरान हमने यही पाया कि भारतीय संस्कृति में नारी का सम्मान जनक स्थान सदैव से रहा है। आगे भी बना रहने की संभावना बलिष्ठ रूप में नजर आ रही है। यहां नारीवादी संघर्षों को मात्र उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

संदर्भ सूचीः–

1- UNDP मानव विकास रिपोर्ट 13–03–2023–24
2- सामाजिक एवं व्यवहार विज्ञान का अन्तर्राष्ट्रीय विश्वकोष 2000
3- WEF रैंकिंग बीबीसी
4- दैनिक भास्कर समाचार पत्र 04–7–24
5- Wemen Investment Behavior Report 2024 Axis Bank